COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 17, Issue No: 2, Year: 2026 (November)
PP: 142-146
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और भाषा अधिगम: वर्तमान प्रवृत्तियाँ, प्रभाव और भविष्य की दिशाएँ

Arashdeep Singh

DAV College of Education, Abohar

सार (**Abstract)**

वर्तमान डिजिटल युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence- AI) शिक्षा के अनेक क्षेत्रों में बदलाव ला रही है, और भाषा-अधिगम भी इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चैटबॉट, बुद्धिमान शिक्षण प्रणालियाँ, अनुवाद उपकरण, वाक्-पहचान तकनीक तथा लेखन-सहायक अनुप्रयोग भाषा सीखने को अधिक संवादात्मक, व्यक्तिगत और सहज बना रहे हैं। इनकी मदद से विद्यार्थी अपनी गति से अभ्यास कर सकते हैं, तुरंत प्रतिक्रिया पा सकते हैं और शब्दावली, व्याकरण, उच्चारण, पठन, लेखन तथा संवाद-कौशल को बेहतर बना सकते हैं। इस शोध-पत्र का उद्देश्य भाषा-अधिगम में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका, इसकी शैक्षिक उपयोगिता, सीमाओं और भविष्य की संभावनाओं को समझना है। अध्ययन उपलब्ध शोध-पत्रों और साहित्य की वर्णनात्मक-समीक्षात्मक समीक्षा पर आधारित है। पूर्ववर्ती अध्ययनों से संकेत मिलता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षण विशेष रूप से व्यक्तिगत अभ्यास और त्वरित प्रतिक्रिया के माध्यम से भाषा-कौशल के विकास में सहायक हो सकता है। फिर भी, गलत जानकारी, भाषायी पक्षपात, निजी डेटा की सुरक्षा, तकनीकी संसाधनों तक असमान पहुँच और कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर अत्यधिक निर्भरता जैसी चुनौतियों को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। इसलिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता को शिक्षक के विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षक के मार्गदर्शन में भाषा सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने वाले सहायक साधन के रूप में अपनाना अधिक उचित है।

प्रमुख शब्द: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, भाषा-अधिगम, भाषा-शिक्षण, जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता, चैटबॉट, वैयक्तिकृत शिक्षण, डिजिटल शिक्षा।

1. परिचय (**Introduction)**

भाषा संवाद करने, समाज से जुड़ने और ज्ञान साझा करने का एक बुनियादी माध्यम है। किसी भाषा को सीखना केवल उसके व्याकरणिक नियम याद कर लेने तक सीमित नहीं है; इसके लिए सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने चारों कौशलों का संतुलित विकास आवश्यक है। पारंपरिक भाषा-शिक्षण में शिक्षक, पाठ्यपुस्तकें, कक्षा-चर्चाएँ और अभ्यास-कार्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। फिर भी, बड़ी कक्षाओं, सीमित समय, व्यक्तिगत प्रतिक्रिया की कमी और विद्यार्थियों की अलग-अलग सीखने की ज़रूरतों के कारण हर विद्यार्थी को पर्याप्त अभ्यास और मार्गदर्शन देना हमेशा आसान नहीं होता।

भाषा सीखना मानव जीवन और सामाजिक विकास का एक अहम हिस्सा रहा है। दूसरी या विदेशी भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों को विशेष रूप से उपयोगी संसाधनों, नियमित संवाद-अभ्यास और अपनी ज़रूरत के अनुसार मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। हाल के वर्षों में तकनीकी विकास, खासकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) के बढ़ते उपयोग ने शिक्षा के तरीकों में नए अवसर पैदा किए हैं (Wang, 2026)।

पारंपरिक कक्षा में एक शिक्षक के लिए तीस या उससे अधिक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत ज़रूरतों, उच्चारण संबंधी कठिनाइयों और सीखने की अलग-अलग गति पर समान रूप से ध्यान देना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस कमी को कुछ हद तक पूरा करते हुए व्यक्तिगत मार्गदर्शन जैसा अनुभव दे सकता है। Duolingo, Grammarly और ChatGPT जैसे उपकरण विद्यार्थियों को भाषा का अभ्यास करने, अपनी गलतियाँ पहचानने और सीखने की प्रक्रिया को अधिक रोचक बनाने में मदद

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

कर रहे हैं (Imran et al., 2026)। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी बदलती भूमिका और इसके शैक्षिक प्रभावों का विश्लेषण करता है।

2. शोध समस्या एवं अध्ययन का महत्व

भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों को नियमित बातचीत का अभ्यास, समय पर प्रतिक्रिया, सही उच्चारण, उपयुक्त शब्दावली और लेखन में सुधार के अवसर चाहिए। पारंपरिक कक्षा में इन सभी ज़रूरतों को एक साथ पूरा करना कई बार कठिन हो जाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरण अभ्यास और प्रतिक्रिया के अतिरिक्त अवसर दे सकते हैं। हालांकि, यह समझना भी उतना ही ज़रूरी है कि इनका उपयोग इस तरह हो जिससे विद्यार्थियों की वास्तविक भाषा-दक्षता बढ़े और वे तकनीक पर पूरी तरह निर्भर न हो जाएँ।

इस अध्ययन का महत्व इस बात में है कि यह भाषा-अधिगम में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभों के साथ-साथ उसकी सीमाओं पर भी विचार करता है। भारतीय शिक्षा-व्यवस्था में अनेक भाषाओं का उपयोग, अंग्रेज़ी सहित विभिन्न भाषाएँ सीखने की आवश्यकता और डिजिटल संसाधनों की असमान उपलब्धता जैसे मुद्दे विशेष रूप से प्रासंगिक हैं। ऐसे संदर्भ में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा-शिक्षण की संभावनाओं और चुनौतियों को संतुलित दृष्टि से समझना उपयोगी है।

3. सैद्धांतिक रूपरेखा (**Theoretical Framework)**

भाषा-अधिगम में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका को समझने के लिए लेव वायगोत्स्की (Lev Vygotsky) का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत (Social Constructivist Theory) और समीपस्थ विकास क्षेत्र (Zone of Proximal Development—ZPD) उपयोगी सैद्धांतिक आधार प्रदान करते हैं (Qiao & Zhao, 2023)।

- सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण: वायगोत्स्की के अनुसार, भाषा और सीखने का विकास दूसरों के साथ बातचीत तथा सहभागिता से होता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चैटबॉट और वॉयस असिस्टेंट विद्यार्थियों को बार-बार संवाद का अभ्यास करने का अवसर देते हैं। ऐसे अभ्यास में वे गलती करने की झिझक कम महसूस कर सकते हैं और धीरे-धीरे अपनी अभिव्यक्ति में आत्मविश्वास विकसित कर सकते हैं।
- समीपस्थ विकास का क्षेत्र (ZPD): इस अवधारणा के अनुसार, सीखना तब अधिक प्रभावी होता है जब कार्य विद्यार्थी की वर्तमान क्षमता से थोड़ा आगे हो, लेकिन उचित सहायता से उसे पूरा किया जा सके। कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियाँ अभ्यास को विद्यार्थी के कौशल के अनुरूप ढालने और आवश्यक संकेत या प्रतिक्रिया देने में मदद कर सकती हैं। इससे विद्यार्थी धीरे-धीरे स्वतंत्र रूप से सीखने और अपनी प्रगति का आकलन करने की क्षमता विकसित कर सकते हैं (Qiao & Zhao, 2023)।

4. भाषा कौशल में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अनुप्रयोग (**Applications of AI in Language Skills)**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता सुनने (Listening), बोलने (Speaking), पढ़ने (Reading) और लिखने (Writing)—भाषा के इन चारों प्रमुख कौशलों के अभ्यास में अलग-अलग प्रकार से मदद कर सकती है।

क. बोलना और उच्चारण (**Speaking and Pronunciation)**

भाषा बोलते समय कई विद्यार्थी गलत उच्चारण के डर या संकोच के कारण खुलकर अभ्यास नहीं कर पाते। ऑटोमैटिक स्पीच रिकग्निशन (ASR) पर आधारित कुछ ऐप विद्यार्थियों के बोले गए शब्दों का विश्लेषण करके उच्चारण संबंधी कठिनाइयों की पहचान करने में मदद करते हैं। कुछ उपकरण स्वर, लय और उतार-चढ़ाव जैसी विशेषताओं पर प्रतिक्रिया भी देते हैं, जिससे विद्यार्थी अपने उच्चारण को सुनकर और सुधारकर अधिक स्पष्ट बोलने का अभ्यास कर सकते हैं (Liu & Hung, 2021)।

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

ख. लेखन और व्याकरण (**Writing and Grammar)**

स्वचालित लेखन मूल्यांकन (Automated Writing Evaluation—AWE) उपकरण, जैसे Grammarly और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा मॉडल, लेखन के दौरान तुरंत सुझाव दे सकते हैं। ये वर्तनी और व्याकरण की गलतियाँ पहचानने के साथ-साथ वाक्य-रचना, शब्दों के चयन और लेखन-शैली को बेहतर बनाने में भी सहायता कर सकते हैं (Nazari et al., 2021; Dizon & Gayed, 2021)। फिर भी, विद्यार्थियों के लिए यह ज़रूरी है कि वे सुझावों को समझकर अपनाएँ, न कि बिना सोचे-समझे हर बदलाव स्वीकार कर लें।

ग. पढ़ना और समझना (**Reading and Comprehension)**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित रीडिंग टूल विद्यार्थियों के भाषा-स्तर के अनुसार पढ़ने की सामग्री को सरल या अधिक चुनौतीपूर्ण बना सकते हैं। कठिन शब्दों के अर्थ, संदर्भ के अनुसार अनुवाद और संक्षिप्त सार उपलब्ध होने से पाठ को समझना आसान हो सकता है। इससे विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ सकता है और पढ़ते समय होने वाली झिझक भी कम हो सकती है (Çakmak, 2022)।

5. कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा अधिगम के लाभ (**Benefits of AI-Driven Language Learning)**

- वैयक्तिकृत शिक्षा (Personalized Learning): हर विद्यार्थी की सीखने की गति, रुचि और कठिनाइयाँ अलग होती हैं। मशीन लर्निंग आधारित प्रणालियाँ इन भिन्नताओं को पहचानकर अभ्यास और सामग्री को विद्यार्थी की ज़रूरत के अनुसार ढालने में मदद कर सकती हैं (Dekhakhena, 2025)।
- तनाव कम करने वाला वातावरण (Anxiety Reduction): कक्षा में कुछ विद्यार्थी गलती होने के डर से प्रश्न पूछने या बोलने में संकोच करते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल के साथ अभ्यास करते समय उन्हें बार-बार कोशिश करने का अवसर मिल सकता है, जिससे धीरे-धीरे संवाद करने का आत्मविश्वास बढ़ सकता है (Hamid, 2026)। हालांकि, यह अभ्यास वास्तविक लोगों के साथ बातचीत का पूरी तरह विकल्प नहीं है।
- सुलभता और निरंतर अभ्यास (24/7 Availability): विद्यार्थी अपनी सुविधा और समय के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरणों की मदद से अभ्यास कर सकते हैं। इस तरह कक्षा के बाहर भी सीखने की निरंतरता बनाए रखना आसान हो सकता है।

6. चुनौतियाँ और सीमाएँ (**Challenges and Limitations)**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक से भाषा-शिक्षण में कई नए अवसर मिले हैं, लेकिन इसके उपयोग के साथ कुछ ऐसी चुनौतियाँ भी हैं जिन पर सावधानी से विचार करना आवश्यक है।

- एल्गोरिथम संबंधी पक्षपात और तकनीकी त्रुटियाँ (Algorithmic Bias and Technical Errors): कभी-कभी कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरण गलत, अधूरी या अस्वाभाविक भाषा प्रस्तुत कर सकते हैं। वाक्-पहचान प्रणालियों को अलग-अलग उच्चारणों और क्षेत्रीय बोलियों को सही ढंग से समझने में भी कठिनाई हो सकती है (British Council, 2021)। इसलिए इनके सुझावों की जाँच करना आवश्यक है।
- शैक्षणिक ईमानदारी और अत्यधिक निर्भरता (Academic Integrity and Over-reliance): यदि विद्यार्थी निबंध लिखने, अनुवाद करने या उत्तर तैयार करने के लिए पूरी तरह जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर निर्भर हो जाएँ, तो उनकी स्वतंत्र सोच, भाषा-अभिव्यक्ति और मौलिक लेखन-कौशल के विकास में बाधा आ सकती है (Hamid, 2026)। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग सीखने में सहायता के लिए होना चाहिए, विद्यार्थी के अपने प्रयास का स्थान लेने के लिए नहीं।

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

- डेटा की गोपनीयता और मानवीय संवेदना की कमी (Data Privacy and Lack of Human Touch): कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरणों का उपयोग करते समय विद्यार्थियों की निजी जानकारी की सुरक्षा का ध्यान रखना ज़रूरी है। इसके अतिरिक्त, भाषा में छिपे सांस्कृतिक अर्थ, भावनाएँ और वास्तविक सामाजिक परिस्थितियाँ हमेशा तकनीक द्वारा पूरी तरह नहीं समझी जा सकतीं। इसीलिए मानवीय संवाद और शिक्षक का संवेदनशील मार्गदर्शन अब भी आवश्यक हैं।

6. भविष्य की दिशाएँ (**Future Directions)**

आगे के शोध और शिक्षण में यह समझना महत्वपूर्ण होगा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को शिक्षक के विकल्प के बजाय एक सहायक साधन के रूप में अपनाया जाए। शिक्षक कक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग का संक्षिप्त रिकॉर्ड रखने, विद्यार्थियों से यह बताने कि उन्होंने तकनीक की मदद कहाँ ली, और प्राप्त उत्तरों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने जैसी गतिविधियाँ शामिल कर सकते हैं। इससे विद्यार्थी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग अपनी सीखने की क्षमता बढ़ाने के लिए करेंगे, न कि अपनी सोच के स्थान पर (Hamid, 2026)।

7. निष्कर्ष (**Conclusion)**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने भाषा-अधिगम में व्यक्तिगत अभ्यास, संवाद के अवसर, त्वरित प्रतिक्रिया, लेखन में सुधार और बहुभाषिक सहायता की नई संभावनाएँ खोली हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरण विद्यार्थियों को अपनी गति से सीखने, गलतियों को पहचानने और कक्षा के बाहर भी अभ्यास जारी रखने में मदद कर सकते हैं। उपलब्ध शोध-साहित्य इन संभावित लाभों की ओर संकेत करता है, हालांकि परिणाम शिक्षण-संदर्भ, अपनाई गई पद्धति और उपयोग की अवधि के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं।

इन संभावनाओं के साथ गलत जानकारी, डेटा की गोपनीयता, भाषायी पक्षपात, डिजिटल संसाधनों तक असमान पहुँच और तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता जैसी चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। भाषा सीखने का उद्देश्य केवल व्याकरण की दृष्टि से सही वाक्य बनाना नहीं है। विद्यार्थी को अर्थ समझने, अपने विचार स्पष्ट रूप से रखने, दूसरों के साथ संवाद करने और अलग-अलग परिस्थितियों में भाषा का उचित प्रयोग करने में भी सक्षम होना चाहिए।

इसलिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता को शिक्षक का पूर्ण विकल्प मानने के बजाय शिक्षण और अभ्यास को सहयोग देने वाले साधन के रूप में उपयोग करना अधिक उचित है। शिक्षक का मार्गदर्शन, विद्यार्थी की सक्रिय भागीदारी, भरोसेमंद मूल्यांकन और तकनीक का जिम्मेदार उपयोग मिलकर भाषा-अधिगम को अधिक सार्थक बना सकते हैं। भविष्य में भारतीय भाषाओं, स्थानीय बोलियों और विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर दीर्घकालिक तथा अनुभव-आधारित शोध की आवश्यकता है, ताकि यह बेहतर ढंग से समझा जा सके कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषा-दक्षता को किन परिस्थितियों में और किस सीमा तक स्थायी रूप से बेहतर बना सकता है।

कुल मिलाकर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषा सीखने के नए रास्ते खोल रही है। व्यक्तिगत प्रतिक्रिया, संवाद-अभ्यास और आसानी से उपलब्ध संसाधनों के कारण विद्यार्थी अपनी ज़रूरत के अनुसार सीखने के अधिक अवसर पा सकते हैं। फिर भी, तकनीकी सीमाओं, संभावित पक्षपात और नैतिक प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए मानवीय दृष्टिकोण बनाए रखना आवश्यक है। शिक्षक के विवेकपूर्ण मार्गदर्शन और जिम्मेदार उपयोग के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता भविष्य की बहुभाषी दुनिया में भाषा सीखने का उपयोगी सहायक बन सकता है।

सन्दर्भ (**References)**

2. Cakmak, F. (2022). Investigating the role of artificial intelligence in reducing foreign language reading anxiety. Journal of Language and Education, 8(3), 45-58.

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

3. Dekhakhena, A. (2025). AI-powered personalized learning in EFL acquisition: Exploring adaptive instruction and feedback systems. Journal of Studies in Language, Culture and Society, 8(1), 111–131. https://asjp.cerist.dz/en/article/266936
4. Dizon, G., & Gayed, J. (2021). Examining the impact of automated writing evaluation on L2 writing performance. Computer Assisted Language Learning, 34(5), 621-645.
5. Hamid, S. M. (2026). Emerging research trends in AI-supported English language teaching. In Artificial Intelligence in English Language Linguistics and Teaching. IntechOpen. https://doi.org/10.5739/intechopen.1251455
6. Imran, M., Almusharraf, N., & Shehzad, K. (2026). Artificial intelligence in school language education: A systematic review of trends, challenges, and future directions. Journal of Interdisciplinary Studies in Education, 15(6), 47–78. https://doi.org/10.32674/w506dk33
7. Nazari, M., Shabbir, M., & Setiawan, B. (2021). Grammarly as a self-editing tool in ESL/EFL writing: A comprehensive review of engagement and efficacy. System, 99, 102-115.
8. Qiao, H., & Zhao, A. (2023). Artificial intelligence-based language learning: Illuminating the impact on speaking skills and self-regulation in Chinese EFL context. Frontiers in Psychology, 14, 1255594. https://doi.org/10.3389/fpsyg.2023.1255594
9. Wang, Y. (2026). Artificial Intelligence in Language Learning: A Twenty-Year Scoping Review. Computer Assisted Language Learning, 1-28. https://doi.org/10.1080/29984475.2026.2647961